# भारतेंदु युगीन काव्य में राष्ट्रीयता

(डॉ रुचिरा ढींगरा)

आधुनिक हिंदी काव्य धारा में भारतेंदु युग का आगमन नवीन जागरण के संदेशवाहक के रूप में हुआ था। ब्रह्मसमाज , प्रार्थना समाज , आर्य समाज का सुधारवादी आंदोलन भी इन्हीं दिनों चल रहा था। मुद्रण यंत्रों के विस्तार और समाचार पत्रों के प्रकाशन ने भी जागरण में योगदान दिया ।

फलस्वरूप युगीन परिस्थितियों , बदलते संदर्भों की पृष्ठभूमि में भारतेंदु हरिश्चंद्र और उनके सहयोगियों -प्रताप नारायण मिश्र , राधा कृष्ण दास,अंबिकादत्त व्यास, जगमोहन सिंह , बद्रीनारायण चौधरी प्रेमघन इत्यादि ने जितनी रचना की उसमें रीतिकालीन श्रृंगार निरूपण से

भिन्न समाज सुधार और राष्ट्रीय जागरण के भावों को वाणी दी गई । भारतेंदु का योगदान इस दिशा में सर्वाधिक रहा है। भारत दुर्दशा , अंधेर नगरी आदि नाटकों , कवि वचन सुधा, हरीश चंद्र मैगजीन आदि पत्रिकाओं एवं अनेक स्फुट कविताओं में उन्होंने समाज सुधार और उसी के प्रति फलन स्वरूप देश प्रेम के स्वर व्यक्त किए हैं । उनकी सुधारवादी मनोवृति अंततः देशभक्ति के रूप में परिणत हुई। भारतेंदु युगीन काव्य में यह राष्ट्रीय चिंतन अनेक रूपों में व्यक्त हुआ है ।

**1.ब्रिटिश शासन के शोषण का विरोध :-**

इन कवियों ने अपनी कविताओं में शासक वर्ग द्वारा देश की जनता के आर्थिक शोषण के प्रति क्षोभ अभिव्यक्त किया है। प्राचीन भारत की भौतिक व सांस्कृतिक समृद्धि की तुलना में वर्तमान महंगाई , अकाल , करों का बोझ देखकर इन कवियों की वाणी अनायास ही करुणा से भीग गई। अंग्रेजों की शोषण नीति और दुरंगी चाल पर व्यंग्य करते हुए भारतेंदु ने लिखा है -

"भीतर -भीतर सब रस चूसै

हंसी हंसी के तन मन धन मूसै

जाहिर बातन  में अति तेज

क्यों सखि सज्जन?  नहीं अंग्रेज!"

इस तरह की अभिव्यक्ति द्वारा इन कवियों ने भारतीय जनता को ब्रिटिश शासन से मुक्ति के संघर्ष के लिए प्रेरित किया है। ब्रिटिश शासन के कारण यातायात के सुगम साधन, शिक्षा का प्रचार , बिजली एवं सिंचाई की सुविधा प्राप्त हुई अतः इन कवियों ने एक ओर तो ब्रिटिश  शासन की प्रशंसा की है जिससे इनकी राज भक्ति का परिचय मिलता है तो दूसरी ओर  ये  कभी यह भी नहीं भूले हैं कि  ब्रिटिश शासन द्वारा भारत से कच्चा माल विदेश भेजकर वहां से तैयार माल आयात कर दिया जाता है जिससे जनता पर बोझ पड़ता है। भारतेंदु ने लिखा है-

" अंग्रेज राज सुख साज सजे सब भारी

पै धन विदेश चलि जात यही अति ख्वारी ।।"

**2.निज भाषा का समर्थन :-**

भारतेंदु जी ने देश की उन्नति के लिए विदेशी भाषा की अपेक्षा हिंदी के प्रयोग पर बल दिया जो उनके प्रबल राष्ट्रप्रेम का ही परिचायक है। ' हिंदी भाषा ' नामक पुस्तक में तथा हिंदी की उन्नति पर दिए गए काव्यात्मक व्याख्यान में उन्होंने इस मत का व्यापक उल्लेख किया है। उनके अनुसार -

"निज भाषा उन्नतिअहै , सब उन्नति को मूल।

बिन निज भाषा ज्ञान के , मिटत न हिय को सूल।।

यह कथन प्रकारांतर से उस युग के अधिकांश कवियों के देश प्रेम को व्यक्त करता है। राष्ट्र की नई रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए इन कवियों ने संस्कृत की असामयिकता और उर्दू और अंग्रेजी की वर्ग भेद वाली नीति से पृथक सहज सरल राष्ट्रभाषा के प्रयोग पर बल दिया है।

3.**देश की दयनीय दशा का मार्मिक चित्रण:-**

इन कवियों ने देश की तत्कालीन दयनीय अवस्था के प्रति भी जनता का ध्यान आकर्षित किया और उसे सुधारने की प्रेरणा दी। प्रताप नारायण मिश्र ने एक ग़ज़ल में देश की दुर्दशा पर गहरी चिंता व्यक्त करते हुए लिखा है

"अभी देखिए क्या दशा देश की हो

बदलता है रंग आसमां कैसे कैसे।"

देश की हीनावस्था से भी विह्ल भारतेंदु लिखते हैं-

" रोवहु सब मिलि, आवहु भारत भाई

हा! हा !भारत दुर्दशा देखी जाई ।।"

4.**स्वदेशी वस्तुओं का आग्रह:-**

भारतीय अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने की भावना से इस युग के कवियों ने स्वदेशी वस्तुओं के प्रयोग करने का आग्रह किया। 'प्रबोधिनी' कविता में भारतेंदु ने विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार की प्रेरणा दी है। प्रेमघन (आर्याभिनन्दन) , प्रताप नारायण मिश्र (होली है); अंबिकादत्त व्यास (भारत धर्म ) ने भी अपनी कविताओं में आयातित विदेशी वस्तुओं को देश की दुर्दशा का मूल कारण सिद्ध किया है।

5.**ईश्वर भक्ति और देश भक्ति का समन्वय:-**

भारतेंदु युगीन कवियों का भक्ति विषयक काव्य भी देशभक्ति की भावना से युक्त है। भारत की दीन दशा को दूर करने के लिए कवि ईश्वर से प्रार्थना करता है। भारतेंदु कृष्ण से भारत के उद्धार की आशा करते हैं-

" जागो अब तो खल बल दलन

रक्षहु अपनों आर्य मग।

****      ******      *****

कहां करुणानिधि केशव सोये।"

प्रताप नारायण मिश्र की प्रार्थना है-

" हम आरत भारतवासिन पै

अब दीन दयाल दया करिए।"

इस प्रकार भारतेंदु युगीन भक्ति भी एक सर्वथा नया आयाम प्रस्तुत करती है।वह रुढिगत ना होकर राष्ट्रीयता की भावना से युक्त है।

**6.समाजसुधार और देशप्रेम:-**

इन कवियों ने सामाजिक परिवर्तन और सांस्कृतिक जागरण के अग्रदूत के रूप में अपने राष्ट्रप्रेम का परिचय दिया। स्त्री शिक्षा, विधवा विवाह, अस्पृश्यता निवारण के पक्षधर इन कवियों ने रूढ़ियों और परंपराओं का विरोध किया तथा सामाजिक चेतना को परिष्कृत करने का प्रयास किया। राधा कृष्ण गोस्वामी इस दृष्टि से अपवाद रहे। उन्होंने विधवा विवाह अनुमोदन नहीं किया।

भारत के प्राचीन गौरव और वीरों के कृत्यों के वर्णन द्वारा भी इन कवियों ने नवजागरण का मंत्र दिया। भारतेंदु ने एक नए छंद 'कहमुकरी ' द्वारा राजनीतिक , सामाजिक समस्याओं पर व्यंग्यात्मक दृष्टिपात किया है। मद्यपान से बचने का परामर्श देते हुए वे कहते हैं -

" मुंह जब लागै तब नहिं छूटै

जाति मान धन सब कुछ लूटै

पागल करि मोहिं करै खराब

क्यों सखि सज्जन ? नहिं सराब।"

भारत दुर्दशा नाटक के एक गीत में उन्होंने "बहुत हमने फैलाए धर्म , बढाया छुआछूत का कर्म " कहकर वर्णाश्रम धर्म की संकीर्णता का विरोध किया।

**7.राजभक्ति बनाम देशभक्ति:-**

राष्ट्रीयता का स्वर भारतेंदु मंडल के सभी कवियों के काव्य में सर्वाधिक मुखर होकर उभरा है। उनके समय में राष्ट्रीयता के दो रूप मिलते हैं -1.राज भक्ति और 2.देश भक्ति । विदेशी शासकों द्वारा किए गए तथाकथित सुधारों की प्रशंसा में लिखी गई रचनाएं राजभक्ति की परिचायक हैं । भारतेंदु की (विजय वल्लरी); प्रेमघन की( हार्दिक हर्षादर्श) ; राधाकृष्ण दास की (मैकडॉनल्ड पुष्पांजलि ) ऐसी की रचनाएं हैं । आलोचकों ने इन्हीं के आधार पर कवियों के देशप्रेम पर प्रश्न चिन्ह लगाया है।

वास्तविकता यह है कि यथार्थ से अवगत होने पर इन्हीं कवियों ने विदेशी साम्राज्यवादी नीति का खंडन भी किया है। राज भक्ति परक रचनाएं करके उन्होंने विदेशी शासकों को प्रजा पालक और रक्षक बनने का उपदेश दिया है तथा स्वशासन के अधिकारों की परोक्ष रूप से मांग भी की है।

निष्कर्षत: भारतेंदु युगीन काव्य समाज सुधार की भावना से अनुप्राणित था। काव्य में राष्ट्रीय विचारधारा की अभिव्यक्ति के ये कवि पक्षधर थे। उनका यह दृष्टिकोण एक ओर भारत की राजनीतिक दासता के प्रति क्षोभ के रूप में अभिव्यक्त हुआ है और दूसरी ओर तत्कालीन सामाजिक परिस्थितियों पर आधारित है। उनका उद्देश्य समाज में राष्ट्रीय जागृति लाना है। प्राय: सभी कवि पत्रकार भी थे। भारतेंदु (कवि वचन सुधा, हरिश्चंद्र मैगजीन ), प्रताप नारायण मिश्र (ब्राह्मण ),प्रेमघन (आनंद कादंबिनी) ने अपनी पत्रिकाओं के संपादकों में देश की समस्याओं, शासकों की नीतियों का समर्थन या विरोध भी  लेखों और कविताओं के रूप में किया है। इस युग में मुखरित  जन जागरण और राष्ट्रीयता का स्वर ही द्विवेदी युगीन शंखनाद बना।  द्विवेदी युग में गुप्त जी ने 'भारत भारती ' में देश की दुरावस्था का अंकन कर उसमें सुधार लाने के लिए भारतीयों का आह्वान किया। इस प्रकार  भारतेंदु युग में नवजागरण और देश प्रेम के जो बीज बोए गए वे द्विवेदी युग में अंकुरित , पल्लवित और विकसित हुए।